राज्य अध्याय 9

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर की उपस्थिति के विषय में जागरूकता के लिए, उसकी आवाज़ सुनने और उसके आत्मा के माध्यम से परमेश्वर द्वारा मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य से सम्बन्धित इस अध्याय को प्रभु के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **1शमूएल 2,3,7 और 8**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** ***(या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि आपने दिये गये बाइबल अनुच्छेद (1शमूएल 2,3,7 और 8)से शान्त समय में क्या सीखा है।

अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें और लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(परमेश्वर का राज्य)*** **(3) रोमियों 2:5**

दो–दो करके ***समीक्षा करें।***

(3) रोमियों 2:5। पर तू अपनी कठोरता और हठीले मन के कारण उसके क्रोध के दिन के लिये, जिसमें परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने लिये क्रोध कमा रहा है।

4	**शिक्षा** (85 मिनट) ***(यीशु के दृष्टान्त)*** **“चुपके से बोये गये बीज का दृष्टान्त और खमीर और राई के दाने का दृष्टान्त**

‘‘चुपके से बोये गये बीज का दृष्टान्त’’ मरकुस 4:26–29 में,
‘‘खमीर का दृष्टान्त’’ लूका 13:20–21 में
और ‘‘राई के दाने का दृष्टान्त’’ मरकुस 4:30–32 दृष्टान्त
परमेश्वर के राज्य की बढ़ोत्तरी के बारे में है।

‘‘दृष्टान्त’’ स्वर्गीय अर्थ के साथ पृथ्वी की कहानी होता है। यह सत्यता में जीवन की कहानी के निकट होता है या जो आत्मिक सत्य को सिखाए एक ऐसा उदाहरण होता है। यीशु ने लोगों को उनके जीवन की परिस्थितियों की वास्तविकता और उनके नवीनीकरण की आवश्यकता को सहारा देने हेतू परमेश्वर के राज्य को समझाने के लिए सामान्य जगहों और प्रतिदिन की घटनाओं का प्रयोग किया।

हम इन दृष्टान्तों का अध्ययन दृष्टान्तों के अध्ययन के लिए प्रयोग की जाने वाली छः रुपरेखा को

प्रयोग करते हुए करेंगे (9वीं नियमावली , परिशिष्ट 1 को देखें)।

क. चुपके से बोये जाने वाले बीज का दृष्टान्त

पढ़ें मरकुस 4:26-29।

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझना।

परिचय। दृष्टान्त को अलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आत्मिक अर्थ इस पर ही आधारित है। इसलिए सर्वप्रथम हम कहानी की प्रष्ठभूमि के शब्दों और संस्कृति और इतिहासिक तथ्यों तथ्यों का अध्यन करेंगे।
चर्चा करें। कहानी के जीवन के लिए-सत्य तत्व क्या है?
ध्यान दें।

पौधें का बढ़ना एक रहस्य होता है। प्रकृति के क्षेत्र में, ''बढ़ोत्तरी'' हमेशा ही रहस्य रहा है! चहे यह पौधे, पेड़, या जानवर या लोग जो भी हो, कोई भी सही तौर पर नहीं बता सकता कैसे और किसा प्रकार बढ़ोत्तरी होती है! किसान अपने खेतों में बीज बिखेरता है, इस बात की पूर्ण जानकारी कि साथ कि वह इन बीजों के बढ़ने का कारण नहीं हो सकता। अंकुरित होने, अंकुरण, बढ़ोत्तरी, फल बनने और फल लगनें की प्रक्रिया पर उसका नियंत्रण नहीं होता। बहुत से दिन और रात ऐसे बीतते है जिनमें किसान बीज के साथ कुछ नहीं करता और तौभी, बढ़ोत्तरी होती है! परन्तु वह यह नहीं जानता कि यह *कैसे* हुआ! सभी किसान केवल एक काम कर सकते है कि वे यह विश्वास करें कि बीज बढ़ेगा और कटनी के समय तक धीरज के साथ प्रतिक्षा करें। पक्का होने के लिए, वह बीज को मट्टी से ढाकता है, उसकी निराई करता है, उसमें खाद डालता है, फिर उसमें पानी डालता है, और उसके सर्य की तपिश से बचाता है। यह सभी जरुरी बातें है परन्तु वे बढ़ोत्तरी का कारण नहीं होते!

पौधे के बीज में संभावित चमत्कार होता है। अपने आप में ही सब कुछ, बिना किसी दिखते कारण और मानवीय सहायता के, बीज भूमि में अंकुरित होता है, एक लम्बे तने के रुप में विकसित होता है, एक छोटे अंकुर के रुप में बढ़ता है और अन्त में एक अंकुर में एक पूर्ण बीज के रुप में विकसित हो जाता है। यह कुछ ऐसा है जैसा कि *परमेश्वर ने बढ़ोत्तरी के छिपे या गप्त रहस्य को एक छोट बीज में समाहित कर दिया हो,* इस लिए अब बीज को सही में मालूम होता है कि उसे क्या, कब, और कैसे करना है। परमेश्वर ने एक छोटे बीज में महान संभावित सामर्थ या योग्यता को भरा है।

बढ़ोत्तरी के स्तर। बढ़ोत्तरी के एक स्तर से दूसरे में परिवर्तन होना इतना सामान्य है कि इसका पता ही नहीं चलता। किसान उन महत्वपूर्ण क्षणों को दिखा नहीं सकता जब एक डंढल अंकुरण में बदल जाती है, या उस अंकुरण में बीजों की एक पूरी कतार उत्पन्न हो जाती है। परन्तु सामन्य परिस्थितियों में यह बढ़ोत्तरी अनिवार्य है। कुछ भी इस बढ़ोत्तरी की प्रक्रिया को रोक नहीं सकता।

कटनी सफलता या विजय की ओर संकेत करती है। मरकुस 4:29 सही में कहता है, ''परन्तु जब दाना पक जाता है, तब वह तुरन्त हंसिया लगाता है, क्योंकि कटनी आ पहुंची है।'' कटनी का विवरण

थोड़ा नाट्किय हैः ''एक बार'', जब कटनी का समय आ जाता है तो किसान बिना किसी देरी के फसल काटता है!

2. तत्कालीन संदर्भ का निरिक्षण करना और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करना।

परिचय। दृष्टान्त की ''कहानी'' का संदर्भ दृष्टान्त की ''परिस्थिति'' और ''व्याख्यान या लागूकरण'' में समाहित होता है। दृष्टान्त की परिस्थिति दृष्टान्त के कहे जाने के मौके को बताती है, या दृष्टान्त के कहे जाने के समय की परिस्थितियों का व्याख्यान करती है। परिस्थिति अक्सर दृष्टान्त की कहानी के *पहले* पाई जाती है और व्याख्यां या लागूकरण दृष्टान्त की कहानी के बाद में पाया जाता है।
खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और व्याख्यान या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मरकुस 4:1-25 और 30-34 में मिलती है.

मरकुस 4:33-34 से, यह प्रगट होता है कि जब यीशु ने बोने वाले के दृष्टान्त को पद 3-9 में, गुप्त में बढ़ने वाले बीज का दृष्टान्त पद 26-29 और राई के दाने का दृष्टान्त पद 30-32 को सुनाया तो वह भीड़ से बातें कर रहा था। वह कहता है, ''बहुत से समान दृष्टान्तों में यीशु ने उनसे वचन के द्वारा जितना वे समझ सकते थे उतनी बातचीत की। बिना दृष्टान्त का प्रयोग किये उसने उन से कोई बात-चीत नहीं की। परन्तु ज बवह अपने चलों के साथ अकेला होता था, वह उन्हें सब कुछ समझाता था।''

(2) इस दृष्टान्त की कहानी मत्ती 13:33 और लूका 13:20-21 में मौजूद है।

(3) व्याख्यां या लागूकरण।

यीशु ने दृष्टान्त का व्याख्यान नहीं दिया। इसलिए दृष्टान्त को अवश्य ही उसकी कहानी और उसके संदर्भ से व्यख्यानित किया जाना चाहिए। (देखें ई)।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानना।

परिचय। किसी आत्मिक महत्व को दर्शाने के लिए यीशु ने प्रत्येक विवरण को कहानी में रखना नहीं चाह। दृष्टान्त की कहानी में प्रासंगिक विवरण वे हैं जो केन्द्रिय बिन्दु या मुख्य विषय या दृष्टान्त के पाठ पर बल देते है। इसलिए हमें दृष्टान्त की कहानी के प्रत्येक विवरण को आत्मिक महत्व से स्वतन्त्र रुप से जोड़ना नहीं चाहिए।

खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त की कहानी में कौन-से विवरण सही में आवश्यक या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

बोने वाला या किसान। कुछ मसीह विश्वासी यह मानते है कि गुप्त में उगने वाले बीज कि दृष्टान्त में वह व्यक्ति या किसान यीशु मसीह को प्रस्तुत करता है, क्योंकि गेहूं के पौधों के मध्य जंगली घास में गेहूं बोने वाला यीशु मसीह है। परन्तु इसका अर्थ यह होगा कि यीशु मसीह यह नहीं जानता कि किस प्रकार बीज उगता, बढ़ता और फलवन्त होता है। यह बात उस विचार को प्रस्तुत करेगी जो कि दृष्टान्त के मुख्य संदेश से अलग होगी। इसलिए गुप्त में उगने वाले दृष्टान्त में, ''बोने वाला'' या किसान दृष्टान्त में महत्वपूर्ण या प्रासंगिक नहीं है। वह केवल कहानी को आगे बढ़ाने के लिए है।

ज़मीन पर बिखेरे गये बीज। यीशु ने इसका व्याख्यान नहीं किया है। कहानी में यह बढ़ने का पहला चरण है और ऐसा होने पर इसके लिए दृष्टान्त में प्रासंगिक विवरण मौजूद है। बीज को अवश्य ही परमेश्वर के राज्य से संबधित होना चाहिए, इसका अर्थ यह है कि लोगों के हृदय और जीवन में परमेश्वर के प्रभुत्व का राज्य होना चाहिए। यह परमेश्वर के वचन की ओर संकेत करता जो लोगों के हृदय में बोया गया हो और बहुतायत का फल लाये (मरकुस 4:14)। यह व्यक्तियों के हृदय में पवित्र आत्मा के द्वारा परमेश्वर की उदारता और संप्रभुता के कार्य की आरे संकेत करता है, पाप के संबन्ध में संसार को दोषी ठहराता है और उनको धार्मिकता और न्याय के लिए याद दिलाता है (यूहन्ना 16:8)। या परमेश्वर के वचन और सुसमाचार को एक स्थान से दूसरे और एक जाति से दूसरी जाति में घोषणा करते हुए यह परमेश्वर के व्यापक कार्य की ओर संकेत करता है (मत्ती 24:14)।

पौधे के अवस्थापरिवर्तनीय स्तर। एक स्तर से दूसरे स्तर में अवस्थापरिवर्तन नजर न आने योग्य है। पौधे के बदलने के विभिन्न स्तर जैसे कि अंकुरण, डंठल, सिरा और पूर्ण बीज के साथ सिरा, इसको व्याख्यानित नहीं किया गया या यीशु के द्वारा बताया नहीं गया है। यह बीज के परिपक्वता और पकने के इन सभी स्तरों में स्वयं बढ़ने की क्षमता के विचार को पुनःस्थापित करता है। इस लिए, पौधे की बढ़ोत्तरी के अवस्थापरिवर्तनीय स्तर को *अलग से* कोई अर्थ नहीं दिया जाना चाहिए। *यह व्यक्ति में आत्मिक उन्नति के पहचाननेयोग्य विशिष्ठ स्तरों या संसार के सुसमाचारिकरण के स्तरों को प्रस्तुत नहीं करते।*

कटनी। गेहूं के मध्य जंगली घास के दृष्टान्त के समान, ''कटनी'', जब यीशु मसीह वापस आयेंगे उस समय अन्तिम न्याय की याद दिलाती है। तौभी, यीशु ने इन विवरणों की व्याख्या या लागूकरण नहीं किया है। यह केवल उस विचार को बल देते है कि परमेश्वर का प्रभुत्व और न रुकने वाला काम मसीही लोगों के मनों और जीवनों में कुंठाग्रस्त नहीं हो सकता है। परमेश्वर का कार्य पूरा और फलवन्त होगा!

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानना।

परिचय। दृष्टान्त का मुख्य संदश या तो व्याख्यान या लागूकरण या स्वयं कहानी में पाया जाता है। जिस प्रकार यीशु स्वयं दृष्टान्त का व्याख्यान या लागूकरण करते है उस तरीके से, हम जानते है कि किस प्रकार हमें दृष्टान्त की व्याख्या करनी चाहिए। दृष्टान्त में सामान्य रुप से कहने के लिए एक मुख्य पाठ, एक मुख्य बिन्दु होता है। इसलिए हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में आत्मिक सत्य को खोजते नहीं रहना चाहिए, परन्तु इसके बदले एक मुख्य पाठ को देखना चाहिए।

चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मख्य पाठ क्या है?

ध्यान दें।

मरकुस 4:26-29 में गुप्त में बढ़ने वाले बीज का दृष्टान्त ''परमेश्वर के राज्य की बढ़ोत्तरी'' के बारे में है।

इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''मनुष्य नहीं केवल परमेश्वर ही आत्मिक बढ़ोत्तरी का कर्त्ता है। केवल परमेश्वर ही उसके राज्य की स्थापना और उन्नति का कर्त्ता है, वह यह कि, उसका राज्य लोगों के हृदय और जीवनों और पृथ्वी के हर कण है।''

परमेश्वर की संप्रभुत्व इच्छा बाइबल में परमेश्वर के वचन के लोगों के जीवनों और हृदयों में और साथ

ही साथ समान्य रुप से समाज में उसके बढ़ते हुए सामर्थी प्रभाव को बताती है। मसीहों के लिए यह तथ्य बड़ा तसल्ली देने और उत्साहित करने वाला है। मसीही लोगों को संयम के साथ कटनी के समय की प्रतिक्षा करनी चाहिए, क्योंकि जब यह आयेगी, यह सम्पूर्ण विजय के साथ आयेगी! उसके राज्य के लिए परमेश्वर की योजना अवश्य पूरी होगी और अवश्य ही पूरी होने जा रही है! परमेश्वर के राज्य का आगमन न रुकने योग्य है!

- परमेश्वर का राज्य <u>एक वर्तमान राज्य है</u> – यह मसीह के प्रथम आगमन पर ही आ गया है!
- परमेश्वर का राज्य <u>लगातार रुपान्तरित होने वाला राज्य है</u> – इसमें मसीहों के जीवनों और हृदय में लगातार रुपान्तरित होने का प्रभाव होता है, जिससे वह अधिक मसीह की समानता में हो जाएं और अधिक फलवंत हों।
- परमेश्वर का राज्य <u>लगातार फैलने वाला राज्य है</u> – यह पृथ्वी पर सभी लोगों के समूहों में और लागों की बढ़ती हुई संख्या के रुप में लगातार फैलता रहता है।
- परमेश्वर का राज्य <u>भविष्यात्मक राज्य है</u> – दूसरे आगमन के समय पर, परमेश्वर का राज्य एक पूर्ण और सिद्ध राज्य होगा। सभी जातियों, गात्रों, लोगों और भाषा में से बचाये गये लोगों की एक बड़ी भीड़ जिसे कोई भी गिन नहीं सकता यीशु मसीह के सिंहासन के समक्ष खड़ी होगी (प्रकाशितवाक्य 7:9) और यह उस समय की पृथ्वी पूर्ण रुप से नयी होगी (2पतरस 3:10-13)!

बीज अपने आप परमेश्वर द्वारा दी गई व्यवस्था के अनुसार बढ़ता है, जिसे बोने वाला (किसान) देख नहीं सकता। इसी प्रकार, परमेश्वर के राज्य में परमेश्वर का अनुग्रहपूर्ण और संप्रभुत्व कार्य परमेश्वर की अनुग्रहपूर्ण और संप्रभुत्व इच्छा के अनुसार बढ़ता है!

परमेश्वर के प्रभुत्व को महसूस करना और आभार प्रगट करना (उसकी अनन्त योजनाएं, उसकी संप्रभुत्व इच्छाएं जो पूरी होंगी और उसकी सर्वसामर्थी शक्ति जो उसको सब कुछ पूरा करने के योग्य बनाती है) परमेश्वर के राज्य का सबसे प्रथम चरित्र है। परमेश्वर के राज्य के सही लोग परमेश्वर पर अपनी पूर्ण निर्भरता को प्रगट करते है। वे अपने छुटकारे के लिए आरंभ से लेकर अंत तक और जीवन के प्रत्येक भाग में अपनी आत्मिक उन्नति के लिए परमेश्वर पर निर्भर होते है। वे सभी जगहों पर अपनी कलीसियाओं के स्थापत्य के लिए और उस समाज में अपने प्रभाव को कायम रखने के लिए जिसमें वे रहते हैं परमेश्वर पर निर्भर होते है। और वे अन्तिम और सभी बातों की अनिवार्य पूर्णता और सिद्धता के लिए परमेश्वर पर निर्भर होते है!

---

5. <u>दृष्टान्त की तुलना बाइबल के समान और विरोधी पद्यांशों के साथ करें।</u>

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान है और आपस में तुलना किए जा सकते है। तथापि, सभी दृष्टान्तों में सत्य समानान्तर है या विरोधाभासी सत्य बाइबल के अन्य पद्यांशों में सिखाया गया है। उन अति महत्वपूर्ण अन्य संदर्भो को खोजने का प्रयास करें जो हमें दृष्टान्तों के व्याख्यान में सहायता करें। दृष्टान्तों के व्याख्यान को हमेशा बाइबल की सीधी स्पष्ट शिक्षा से जाँचे।

पढ़ें। यशायाह 55:10-11; 14:24,27; भ.सं. 138:8।

खोजें व चर्चा करें। किस प्रकार बाइबल के यह पद्यांश जो सिखाते है, उसकी तुलना दृष्टान्तों की शिक्षा से की जा सकती है?

ध्यान दें।

यशायाह 55:10-11 में लिखा है, "जिस प्रकार से वर्षा और हिम आकाश से गिरते हैं और वहां यों ही लौट नहीं जाते, वरन् भूमि पर पड़कर उपज उपजाते हैं जिस से बोने वाले को बीज और खानेवाले को रोटी मिलती है, <u>उसी प्रकार से मेरा वचन भी व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिए मैंने उसको भेजा है उसे वह सुफल करेगा।</u>" बाइबल में परमेश्वर का वचन परमेश्वर की इच्छा को पूरा करता है और उस उद्देश्य को पूरा करता है जिसके लिए उसे भेजा गया है!

उसी प्रकार, परमेश्वर अपने बच्चों के लिए अपने उद्देश्य को पूरा करेगा और अपने हाथों के काम को कभी न त्यागेगा (भ.सं. 138:8)! जो उसने आरंभ किया है उसे वह पूरा करेगा (फिलिप्पियों 1:6)। परमेश्वर के सभी उद्देश्य वास्तविकता बन जायेंगे और कोई भी उसे उसके उद्देश्य को पूरा करने से रोक नहीं सकता (यशायाह 14:24,27)!

---

6. <u>दृष्टान्त की मुख्य शिक्षा को संक्षिप्त करें।</u>

विचार करें। दृष्टान्तों की प्रमुख शिक्षाएं और संदश क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें जानने या विश्वास करने के लिए क्या सिखाया है और उसने हमें होने या करने के लिए क्या सिखाया है?

ध्यान दें।

यह दृष्टान्त बहुत से मानवीय उत्साह, मानवीय विचारधारा और मानवीय उतावलापन के विरुद्ध परमेश्वर के काम के संबन्ध में चेतावनी हैं। लोग पूछते हैं, "क्यों परमेश्वर इस अंधकारमय और टूटे हुए संसार में अपने राज्य को जल्दी से स्थापित नहीं कर देते?" परिणाम हमेशा ही निरुत्साह, उदासीनता और लगन और दृढ़ता की कमी के रुप में आता है। यह दृष्टान्त हमारी उदासीनता को उत्साह और भरोसेमंद विचारों में बदलना चाहता है। जहां भी हम बोयेंगे, वहां पर एक दिन फसल तैयार होगी! यदि वहां पर बहुत भी है हम परमेश्वर की योजना और कार्य को नहीं समझ कि वह कभी भी असफल नहीं होगा!

यह तथ्य उस तथ्य को समाप्त नहीं करता कि मसीही लोग परमेश्वर के सहकर्मी के रुप में कार्य करते हैं (1कुरि. 3:6-9)। परन्तु गुप्त में उगने वाले बीज का दृष्टान्त लोगों के हृदय और जीवनों में परमेश्वर के प्रभुत्व के कार्य पर बल देता है। इस लिए परमेश्वर कहता है, "लौट आने और शान्त रहने में तुम्हारा उद्धार है; शान्त रहने और भरोसा रखने में तुम्हारी वीरता है" (यशायाह 30:15)। जो परमेश्वर ने तुम्हें रौशनी में कहा हो उस पर अंधकार में संदेह न करें!

ख. खमीर का दृष्टान्त।

पढ़ें. मत्ती 13:33; लूका 13:20-21.

1. <u>दृष्टान्त की स्वाभाविक कहानी को समझें।</u>

चर्चा करें। कहानी में जीवन के लिए सत्य तत्व कौन से है?

ध्यान दें।

भोजन की मात्रा. बाइबल सही में कहती है कि स्त्री ने ''खमीर को लिया और तीन पसेरी आटे में मिला दिया और पूरा गूंथा हुआ आटा खमीरा हो गया।'' ''माप'' (आरामी और यूनानी में: पसेरी) को एपा का एक तिहाई अनुमान लगाया जाता है, जो कि लगभग 7.3 लीटर के बराबर होता है। यह एक भोजन की बड़ी मात्रा है, जो कुछ 22 लीटर भोजन के बराबर है (उत्पत्ति 18:6; न्यायियो 6:19; 1शामुएल 1:24)।

खमीर. खमीर एक ऐसा तत्व होता है जिसमे फफूंद होता है। यह कण शर्करा के साथ मिल का उगनी की प्रक्रिया के अर्न्तगत बढ़ते है और उफान (खमीर) को उत्पन्न करते हैं। खमीर का प्रयोग मदिरा बनाने और रोटी में खमीर उठाने के लिए किया जाता है।

---

2. तत्कालीन संदर्भ का निरिक्षण करना और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करना।

खोजें एवं चर्चा करें इस दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और व्याख्यान या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती 13:3-35 और लूका 13:18-21 में पाए जाने वाले दूसरे दृष्टान्तों के समान है।

यह दर्शाता है कि यीशु ने खमीर और राई के दाने के दृष्टान्त को बीज बोने वाले और गेहूं के बीच में जगली घास के दृष्टान्त के नजदीकी संबन्ध में लोगों को सुनाया।

(2) इस दृष्टान्त की कहानी को मत्ती 13:33 और लूका 13:20-21 में लिया गया है।

(3) व्याख्यां या लागूकरण।

यीशु ने दृष्टान्त का व्याख्यान नहीं किया है। इसलिए दृष्टान्त को अवश्य ही उसकी कहानी और उसके संदर्भ से ही व्याख्यानित करना होगा। (देखें ई)।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचाने।

सिखायें। जब भी यीशु ने कहा, ''परमेश्वर का राज्य *...समान* है'' वह सिखाना चाहता है कि परमेश्वर के राज्य में अभी पृथ्वी पर क्या होता है और यीशु मसीह के दूसरे आगमन के समय जब परमेश्वर का राज्य अपने अन्तिम रुप में प्रगट किया जायेगा तो सही में क्या होगा। अन्तिम न्याय के दिन, दृष्टान्त में विवर्णित घटनाएँ पक्के तौर पर घटेंगी। इसका अर्थ यह है कि वे लोग जो आज रह रहे है उन घटनाओं में शामिल है जिनका दृष्टान्त में वर्णन किया गया है! यीशु मसीह के प्रत्येक दृष्टान्त में आपके और मेरे लिए आज संदेश है!!!
चर्चा करें। इस दृष्टान्त में कौन सा विवरण सही में जरुरी या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

खमीर। खमीर एक प्रासंगिक विवरण है, क्योंकि यीशु मसीह ने परमेश्वर के राज्य की तुल्ना इससे की है। तौभी, बहुत से विभिन्न मसीही लोगों के द्वारा इस विवरण को अलग तरीके से व्याख्यानित किया गया है। बाइबल में, विशिष्ठि प्रतिकों को या तो बुरे या भले महत्व के लिए उनके संदर्भ पर निर्भर करते हुए प्रयोग किया गया है। उदहारण के लिए, ''सांप'' का प्रतिक उत्पत्ति 3:13 में बुरे रुप में

प्रयोग किया गया, जहां पर वह शैतान को प्रस्तुत करता है, जिसने हव्वा को धोखा दिया, और पाप के लिए परिक्षा में डाला (यह भ.सं. 140:3; नीतिवचन 23:32; यशायाह 27:1; मत्ती 23:33; 2कुरि. 11:3 और प्र.वा. 12:9 में भी *बुरे* के रुप में प्रयोग किया गया)। यद्यपि, ''सांप'' का चिन्ह गिनति 21:8 में *अच्छे* के लिए प्रयोग किया गया, जहां पर वह चिन्हात्मक रुप में यीशु को क्रूस पर प्रगट करता है (यूहन्ना 3:14 में भी यह अच्छे के रुप में प्रयोग किया गया है)। इसी के समाना ''शेर'' शब्द 1पतरस 5:8 में शैतान को और प्र.वा. 5:5 में यीशु को प्रस्तुत करता है।

इसी प्रकार, ''खमीर'' के चिन्ह को मत्ती 16:6 में *बुरे* के लिए प्रयोग किया गया, जहां पर यीशु ने फरीसीयों और सदूकियों की शिक्षाओं और धर्म के विरुद्ध सावधान रहने के लिए कहा। उनकी शिक्षाओं में न्याय (उद्धार) को पाने के लिए मानवीय प्रयासों को समाहित किया गया और उनका धर्म मनुष्य के द्वारा बनाये गये बाहरी कार्यो को दर्शाता था। वे धार्मिकता और सत्य के प्रति सम्पूर्ण हृदय से समपर्ण को पसंद नहीं करते थे। यीशु ने उनकी शिक्षाओं को ''खमीर'' कह कर बुलाया, क्योंकि, यह तेजी से उनके और अन्य लोगों के जीवनों में प्रभावी सिद्धान्त के रुप में प्रवेश कर रहा था। 1कुरि. 5:6-8 में भी ''खमीर'' के चिन्ह को *बुरे* अर्थ में लिया गया है, जहां पर पौलुस आत्मिक वरदानों के लिए गलत प्रकार की महिमा की निन्दा करता है, जो कि उसी समय पर कलीसिया में आन्तरिक अलगाव और लैंगिक अनैतिकता को बर्दाशत कर रही थी। कुरिन्थियो की कलीसिया में प्रमुख आवाज आत्मिक धमण्ड था।

परन्तु <u>खमीर के दृष्टान्त में ''खमीर'' का *भला* अर्थ है।</u> यीशु ने स्पष्ट रुप से सिखाया कि यह ''परमेश्वर के राज्य या परमेश्वर के प्रभुत्व'' को प्रगट करता है, यह कि, ''परमेश्वर का राज्य जो, सम्पूर्ण हृदय से मसीही लोगों के दिलों और जीवनों में स्वीकार किया गया है''। खमीर मे खमीर उठाने का गुण होता है जब तक कि उसे पूरे आटे को ऐसा करने न दिया जाए। अतः, <u>''खमीर जीवनों में परमेश्वर के राज्य या परमेश्वर की प्रभुता के बदलाव के प्रभाव को प्रस्तुत करता है!</u>

---

4. <u>दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।</u>

चर्चा करें। दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 13:20-21 में खमीर का दृष्टान्त ''परमेश्वर के राज्य की बढ़ोत्तरी'' के बारे में है। दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। ''जब एक बार परमेश्वर का राज्य मसीही व्यक्ति के हृदय में स्थापित हो जाता है, यह अपने प्रभाव की प्रक्रिया को जारी रखता है जब तक वह सब कुछ को बदल नहीं देता और नया नहीं कर देता!''

यह दृष्टान्त <u>विशेष रुप परमेश्वर के राज्य की आन्तरिक बढ़ोत्तरी पर बल देता है</u> (लगभग लूका 17:21)। मसीही लोगों के हृदय में परमेश्वर का राज्य उनके व्यक्तिगत जीवन के प्रत्येक भाग पर प्रभाव डालता है। यह उन्हें बचाता है सुरक्षित रखता है और उनके व्यक्तित्व, चरित्र, व्यवहार, संबन्धों, कार्यो और सेवकाई के प्रत्येक भाग को पुनःरचित करता है।
परमेश्वर के प्रभुत्व के कार्य को महसूस और स्वीकार करते हुए परमेश्वर के राज्य की आन्तरिक बढ़ोत्तरी उसके राज्य की एक आधारभूत खूबी है। परमेश्वर के राज्य के असल लोग परमेश्वर की

सम्पूर्ण प्रभुसत्ता को सभी बातों में जो उसके राज्य की आन्तरिक बढ़ोत्तरी से संबन्धित है स्वीकार करते है। राज्य के अन्तिम स्तर में प्रत्येक के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को अनुमति दी जाएगी जो नये स्वर्ग और नई पृथ्वी का एक भाग होगा। मसीही लोग पूर्ण रुप से मसीह के समान हो जायेंगे (2कुरि. 3:18; 1यूहन्ना 3:1-3)।

ग. राई के दाने का दृष्टान्त

पढ़ें। मत्ती 13:31-32; मरकुस 4:30-32; लूका 13:18-19.

1. दृष्टान्त की वास्तविक कहानी को समझें।

चर्चा करें। कहानी में जीवन के लिए सत्य तत्व कौन से है?
ध्यान दें।

राई का दाना। यह दाना मिस्री उत्पत्ति का है और यह सबसे छोटा बीज होता है जो बाग में बोया जाता है। कहावत में यह वस्तु की ओर संकेत करती है जो आरंभ में सबसे छोटा होता है। यद्यपि आरंभ में महत्वहीन होता है परन्तु राई का दाना इतना बढ़ता है कि पेड़ बन जाता है।

राई का पेड़। पलिस्तीन में राई का पेड़ खेत का सबसे बड़ा पौधा होता है और तीन से पाँच मीटर की ऊचाई तक पहुँच सकता है। पतझड़ के मौसम में, इसकी शाखाएं इतनी बड़ी हो जाती हैं कि पक्षी आ कर इसमें शरण पाते हैं। बाइबल कहती है, ''वे उसकी शाखाओं में तूफान से बचने, घबराहट से आराम पाने और सूरज की गर्मी से बचने हेतु'' अपना घर बनाने के लिए आते है। वे छोटे काले बीजों को बालियों में से निकाल कर खाने के लिए भी आते हैं, परन्तु यह बात दृष्टान्त में नहींकही गई है। अतः, सारी बातों में, राई के पेड़ का चित्रण कुछ ऐसा अच्छा स्थान है जिसे कोई अपना घर बना सकता है!

---

2. तत्कालीन संदर्भ का निरिक्षण करना और दृष्टान्त के तत्वों को निर्धारित करना।

खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त की परिस्थिति, कहानी और व्याख्यान या लागूकरण क्या है?
ध्यान दें।

(1) इस दृष्टान्त की परिस्थिति मत्ती 13:3-35 और लूका 13:18-21 में पाए जाने वाले दूसरे दृष्टान्तों के समान है।

यह दर्शाता है कि यीशु ने खमीर और राई के दाने के दृष्टान्त को बीज बोने वाले और गेहूं के बीच में जगली घास के दृष्टान्त के नजदीकी संबन्ध में लोगों को सुनाया।

(2) इस दृष्टान्त की कहानी को मत्ती 13:31-32, मरकुस 4:30-32 और लूका 13:18-19 में लिया गया है।

(3) व्याख्यां या लागूकरण।

यीशु ने दृष्टान्त का व्याख्यान नहीं किया है। इसलिए दृष्टान्त को अवश्य ही उसकी कहानी और उसके

संदर्भ से ही व्याख्यानित करना होगा। (देखें ई)।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण को पहचानें।

खोजें व चर्चा करें। इस दृष्टान्त में कौन सा विवरण सही में जरुरी या प्रासंगिक है?
ध्यान दें।

राई का दाना। यह एक प्रासंगिक विवरण है, क्योंकि यीशु ने परमेश्वर के राज्य की इससे तुलना की है। क्योंकि खेत से सभी पौधों में से इसका बीज सबसे छोटा होता है, यह संसार में परमेश्वर के राज्य के बहुत छोटे महत्पूर्ण आरंभ को प्रस्तुत करता है।

राई का पेड़. यह भी एक प्रासंगिक विवरण है, क्योंकि राई का दाना एक महत्वपूर्ण राई का पेड़ बन जाता है। राई का पेड़े जो क्यारी के पौधों में *सबसे बड़ा* पौधा होता है और स्वर्ग के पक्षियों को अपना घर बनाने के लिए स्थान देता है, संसार में परमेश्वर के राज्य के महत्वपूर्ण महान परिणाम को प्रस्तुत करता है।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचाने।

चर्चा करें। दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

मरकुस 4:30-32 में राई के दाने का दृष्टान्त "परमेश्वर के राज्य की बढ़ोत्तरी" के बारे में है।

दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित है। "यद्यपि परमेश्वर के राज्य का आरंभ छोटा महत्वहीन है, परन्तु यह संसार में बहुत महत्वपूर्ण परिणाम में बढ़ जाता है।

यह दृष्टान्त परमेश्वर के राज्य की दृश्य और बहारी बढ़ोत्तरी पर बल देता है (उदाहरण के लिए मत्ती 24:14)। मसीही लोगों के जीवन और हृदय में परमेश्वर का राज्य अन्ततः संसार में जीवन के प्रत्येक भाग प्रभाव डालता है। यह संसार में बहुत से अन्य लोगों को बचायेगा, उन्हें सुरक्षित रखेगा और उनके परिवारिक जीवन, शिक्षा, स्वास्थय सेवा, सरकार, न्याय प्रणाली, उद्योग, वाणिज्य आदि को पुर्न-रचित करेंगा। यह संसार में सभी जगहों पर बहुत सी नयी कलीसियाओं की स्थापना करने में और बहुत से लोगों को प्रत्येक जाति, देश, और संस्कृति में से परिवर्तित करने में अगुवाई करेगा।

परमेश्वर के प्रभुत्व के कार्य को महसूस और स्वीकार करते हुए परमेश्वर के राज्य की आन्तरिक बढ़ोत्तरी उसके राज्य की एक आधारभूत खूबी है। परमेश्वर के राज्य के असल लोग परमेश्वर की सम्पूर्ण प्रभुसत्ता को सभी बातों में जो उसके राज्य की बहारी बढ़ोत्तरी से संबन्धित है स्वीकार करते है। राज्य अपने अन्तिम प्रगटीकरण में प्रत्येक उस बात को जो नये स्वर्ग और नयी पृथ्वी का भाग होगा उसको ढाप लेगा। इस संसार में और पृथ्वी पर सभी बातें यीशु मसीह के अधिकार के अर्न्तगत आ जायेगी (1कुरि. 15:25; इफिसियों 1:10)। संसार में से सभी विभिन्न जातियों के मसीही लोग परमेश्वर के राज्य में वैभव, महिमा, और उनकी संस्कृतियों के लिए आदर लेकर आयेंगे (2कुरि.

10:3-6)। कुछ भी जो पाप का कारण हो या अपवित्र हो इसमें प्रवेश नहीं करेगा (मत्ती 13:41; प्र. वा. 21:27)।

घ. बढ़ोत्तरी के दृष्टान्तों की एक दूसरे के साथ तुलना

खोजें और चर्चा करें। किस प्रकार यह दृष्टान्त एक दूसरे के साथ तुलना करते हैं?
ध्यान दें।

(1) बोने वाले का दृष्टान्त.

पढ़ें. मरकुस 4:3-9. यह दृष्टान्त बीज, परमेश्वर का वचन, के रुप में मानवीय जिम्मेदारी पर बल देता है। बीज तब तक अंकुरण, अंकुर, डंढल और फलवंत नहीं हो सकता जब तक कि उसे अच्छी भूमि में न डाला जाये। इसका अर्थ यह है कि सुसमाचार या नये नियम का संदेश केवल तभी फलवंत होगा जब मनुष्य का हृदय उसके पक्ष में प्रतिउत्तर देगा। मनुष्य को हमेशा परमेश्वर के वचन के पक्ष में प्रतिउत्तर देने की जिम्मेदारी है। एक बार एक व्ययवस्थापक ने यीशु से पूछा, "गुरु अनन्त जीवन में प्रवेश करने के लिए मैं क्या करुँ?" यीशु ने उससे पूछा, "बाइबल में क्या लिखा है? "तू उसे कैसे पढ़ता है?" व्यवस्था का ज्ञाता उत्तर देता है, "कि लू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख; और अपने पड़ोसी से आपने समान प्रेम रख।" यीशु ने उसे आज्ञा और चुनौती भी दी, "तूने सही उत्तर दिया है। *ऐसा ही कर* और तू जीवित रहेगा" (लूका 10:25-28)। परमेश्वर के वचन के शिक्षक और प्रचारक को हमेशा परमेश्वर के वचन को समझाने वाला ही नहीं होना चाहिए, परन्तु सुनने वाले को अवश्य ही परमेश्वर के वचन के पक्ष में प्रतिउत्तर देने के लिए चुनौती देनी चाहिए!

(2) गुप्त में उगने वाले बीज का दृष्टान्त.

पढ़ें. मरकुस 4:26-29. यह दृष्टान्त उसकी आत्मा और उसके वचन के द्वारा उसके राज्य की स्थापना और बढ़ोत्तरी के संबन्ध में बीज के विषय में दिव्य संप्रभुता पर बल देता है। कोई भी नहीं केवल परमेश्वर ही भौतिक और आत्मिक बढ़ोत्तरी का कर्त्ताधरता है! केवल परमेश्वर ही आपने राज्य की स्थापत्य और उन्नति का कारण है। केवल परमेश्वर ही लोगों के हृदय, जीवनों और भागों में उसके राज्य के स्थापत्य और उन्नति का कारण है। यह उसकी सर्वसामर्थी इच्छा के करण है कि आत्मिक बीज, परमेश्वर का वचन, लोगों के हृदय पर उसके बढ़ते हुए सामर्थी प्रभाव के साथ और समान रुप से समाज में कहा जाता है।

(3) खमीर और राई के दाने का दृष्टान्त.

पढ़ें. मरकुस 4:30-32 और मत्ती 13:31-34. बीज बोने वाले का दृष्टान्त और गुप्त में उगने वाले बीज का दृष्टान्त, हमें क्या करना चाहिए और अपने वचन से संबन्धित आत्मिक उन्नति के क्षेत्र में और फलवंत होने के लिए परमेश्वर क्या करता है, इस बात पर बल देते हैं। खमीर और राई के दाने का दृष्टान्त, यद्यपि, जब मनुष्य परमेश्वर के साथ सहयोग देता है उस समय पर आत्मिक बढ़ोत्तरी की बहुतायत के परिणाम पर बल देते हैं।
फिलिप्पियों 2:12-13 कहता है, "इसलिए, ...डरते और कांपते हुए अपने उद्धार के कार्य को पूरा करते जाओ, क्योंकि वह परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा के निमित्त तुम्हारे मन मे इच्छा और काम, दोनों बातों के करन का प्रभाव डाला है।" इसलिए, जब तुम अपने उद्धार के लिए काम करते हो (बीज बोने वाले का दृष्टान्त), परमेश्वर तुम में काम करता है (गुप्त में उगने वाले बीज का

दृष्टान्त), तब बहुतायत की आन्तरिक बढ़ोत्तरी (खमीर का दृष्टान्त) और बहारी बढ़ोत्तरी (राई के दाने का दृष्टान्त) पक्कायत का परिणाम होगा! खमीर का दृष्टान्त इस आन्तरिक उन्नति पर बल देता है (रुपान्तरण), जो लोगों के हृदयों, जीवनों ओर स्थिति में परमेश्वर के राज्य का कारण होती है। राई के दाने का दृष्टान्त इस बहारी उन्नति (फैलाव) पर बल देता है, जिससे परमेश्वर का राज्य संसार के सभी देशों में फैलाव का कारण हो जाता है।

इ. परमेश्वर के राज्य में बढ़ोत्तरी के संबन्ध में दृष्टान्तों की मुख्य शिक्षाओं को सारांश

खोजें व चर्चा करें। बढ़ोत्तरी के दृष्टान्तों की मुख्य शिक्षाएँ और संदेश क्या है? यीशु ने हमें *जानने* या *विश्वास* करने के लिए क्या सिखाय है और *होने* या *करने* के लिए उसने हमें क्या सिखाया है?
ध्यान दें।

(1) मुख्य संदेश।

परमेश्वर के राज्य की बढ़ोत्तरी के संबन्ध में इन दृष्टान्तों का मुख्य संदेश निम्नलिखित है।
''जब मनुष्य का परमेश्वर के वचन के पक्ष में प्रतिउत्तर उसके हृदय और जीवन में परमेश्वर के अथक कार्य के साथ सहयोग में होता है तब मनुष्य की भीतरी और बहारी जिन्दगी दोनो में और संसार में मानव समाज के प्रत्येक क्षेत्र में बहुतायत की बढ़ोत्तरी परिणाम स्वरुप होती है।''

फिलिप्पियों 2:12-13 कहता है, ''इसलिए, ...डरते और कांपते हुए अपने उद्धार के कार्य को पूरा करते जाओ, क्योंकि वह परमेश्वर ही है जिसने अपनी सुइच्छा के निमित्त तुम्हारे मन मे इच्छा और काम, दोनों बातों के करन का प्रभाव डाला है।'' जब मनुष्य अपनी इच्छा से परमेश्वर के प्रभुत्व के कार्य को अपने में होने देता है तब बहुतायत की बढ़ोत्तरी परिणाम स्वरुप होती है!

बीज बोने वाला दृष्टान्त परमेश्वर के वचन के पक्ष में प्रतिउत्तर देने के लिए मानवीय जिम्मेदारी पर बल देता है। गुप्त में उगने वाले बीज का दृष्टान्त परमेश्वर के वचन और संसार में और लोगों में आत्मा के कार्य के अथक प्रभुत्व पर बल देता है। खमीर का दृष्टान्त आन्तरिक बढ़ोत्तरी (परिवर्तन) बल देता है जो लोगों के व्यक्तिगत जीवनों में परमेश्वर के राज्य को स्थापित करने का कारण होता है और राई के दाने का दृष्टान्त बहारी बढ़ोत्तरी (फैलाव) पर बल देता है जो संसार में सम्पूर्ण मानव समाज में परमेश्वर के राज्य का कारण होता।

(2) रहस्य में आत्मिक उन्नति।

मरकुस 4:26-27 बढ़ोत्तरी के गुप्त या रहस्य के बारे में बोलता है। कोई भी आत्मिक या भौतिक बढ़ोत्तरी के रहस्य को पूर्ण रुप से व्यख्यानित नहीं कर सकता। हम बढ़ोत्तरी और फलवंत होने को देख सकते है, परन्तु हम किसी भी व्यक्ति को उसकी बढ़ोत्तरी और फल लाने के लिए जिम्मेदार नहीं ठहरा सकते। तथ्यात्मक रुप से, यूहन्ना 15:5 कहता है व्यक्ति स्वयं भी कुछ नहीं कर सकता (अनन्त मुल्यों के लिए)। एक व्यक्ति केवल उसी समय परमेश्वर पर सच्चे विश्वास में उसकी ओर मुड़ सकता है जब परमेश्वर उसको ऐसा करने के लिए अनुग्रह और सामर्थ प्रदान करें। वह तब तक परिवर्तित नहीं हो सकता जब तक कि सबसे पहले वह पुनर्जीवित नहीं हो जाता (यिर्मयाह 31:18; यूहन्ना 3:3-8; 1कुरि. 4:7; इफिसियों 2:8; फिलिप्पियों 1:29; 2:12-13; 4:13)।

यह केवल परमेश्वर की सर्वोपरि इच्छा के द्वारा होता है कि परमेश्वर का वचन लोगों के दिलों और जीवनों और संसार के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी बढ़ती हुई सामर्थ के साथ प्रभाव छोड़ता है। मसीही लोग बहुत सुसमाचार प्रचार कर सकते हैं और बचे हुओं को चेला बना सकते है, परन्तु वे लोगों के नये जन्म, आत्मिकता में बढ़ने या फलवंत होने का कारण नहीं हो सकते। केवल परमेश्वर ही इस प्रकार की बढ़ोत्तरी का कारण हो सकता है (1कुरि. 3:5-9)! मसीही लोगों को परमेश्वर के कार्य को परमेश्वर पर छोड़ देना चाहिए और परमेश्वर के काम पर भरोसा करना चाहिए!

(3) परमेश्वर के वचन में महान संभावित सामर्थ होती है।

मरकुस 4:28 बीज की संभावित सामर्थ के बारे में बोलता है, जो परमेश्वर का वचन है। मनुष्य की सहायता से अलग, परमेश्वर का वचन जानता है क्या करना है, कब करना है, और कैसे करना है (यशायाह 55:10-11)! परमेश्वर का वचन अथक और सामर्थी रुप से लोगों के हृदय में कार्य करता है (यिर्मयाह 23:28-29; इब्रानीयों 4:12)। परमेश्वर का वचन एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में और एक देश से दूसरे देश में यात्रा करता है (प्रेरितों के काम 19:10,20)। परमेश्वर का वचन का प्रभाव बढ़ती हुई सामर्थ के साथ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में महसूस किया जा सकता है (1पतरस 1:22-2:3)। इसलिए मसीही लोग परमेश्वर के वचन को प्रचार करने के लिए प्रत्येक प्रयास को करते हैं और ध्यान रखते है कि परमेश्वर का वचन जाना जाए और जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आदर पाए, जैसा कि परिवार, कलीसिया, सरकार, शिक्षा, कृषि, उद्योग, वाणिज्य और जनप्रसार पाता है।

(4) दूसरे आगमन के समय पर कटनी अन्तिम विजय होगी।

मरकुस 4:29 कटनी के समय पर संसार के अन्त में अन्तिम विजय के विषय में बोलता है। परमेश्वर के राज्य की पूर्ण विजय सही रुप में पक्की है! सभी समयों पर कटनी निकट आ रही है। परमेश्वर के नियुक्त समय पर, यीशु मसीह वापस आयेगा, सभी विश्वासीयों को आकाश में (1थिसलुनिकियों 4:17) अपने सिंहासन के समाने इक्ट्ठा करेगा (मत्ती 25:31-33) जो कभी पृथ्वी पर रहे थे और उसके बाद उनके साथ नयी पृथ्वी पर वास करेगा (प्र.वा. 21:2-5)। तब परमेश्वर का राज्य उसके अन्तिम रुप में महसूस किया जाऐगा। परमेश्वर के राज्य से संबन्धित उसकी योजना और कार्यक्रम अवश्य ही पूरे होंगे और पक्के तौर पर पूरे होने जा रहे हैं!

(5) परमेश्वर का राज्य बिना बोने के द्वारा स्थापित होता है।

बोने वाले का दृष्टान्त, गेहूं में जंगली बीज, गुप्त में उगने वाले बीज, खमीर और राई के दाने का दृष्टान्त सभी यह सिखाते हैं कि जब यीशु मसीह उद्धारकर्त्ता और राजा के रुप में मनुष्य के हृदय में प्रवेश करता है तो वह रोपण बिना कुछ के होता है! कोई भी स्वयं को अपने आप नहीं धकेल सकता! जैसा कि कोई भी अपने आप सोच, बोल या परमेश्वर के राज्य में अपने तरीके से कार्य नहीं कर सकता है! कोई भी सीढ़ी पर चढ़कर (व्यवस्था की, धार्मिकता या अच्छे काम या धर्म की) परमेश्वर के पास नहीं पहुँच सकता। परमेश्वर स्वयं ही प्रभुत्व की पहल को करता है और लोगों को मसीह के पास ले कर आता है (यूहन्ना 6:44,37)। सुसामाचार के बीज को लोगों के हृदय में बोने के लिए वह स्वयं ही मसीह और अन्य लोगों को भेजने के लिए प्रभुत्व की पहल करता है। वे आप को सुसमाचार प्रचार करते हैं इससे पहले कि आप परिवर्तन और विश्वास के द्वारा प्रतिउत्तर देना आंरभ करें (प्रेरितों के काम 13:46-48; रोमियों 10:14-17; इफिसियों 2:8; फिलिप्पियों 1:29)। सुसमाचार के बीज को उगने देने, बढ़ने और फलवंत होने देने के लिए परमेश्वर पवित्र आत्मा के द्वारा अथक रुप से

कार्य करता है (यशायाह 55:10-11; 2थिसलुनिकियों 2:13-15)।

(6) परमेश्वर का राज्य बहारी रुप में भी कार्य करता है।

खमीर और राई के दाने का दृष्टान्त यह सिखाते है कि एक बार जब मसीह का राज्य वचन और पवित्र आत्मा के द्वारा व्यक्ति के मन स्थापित हो जाता है, तो यह बाहरी रुप में भी कार्य करना आरंभ कर देता है! मसीह के राज्य का प्रभाव जब तक परिवर्तन और सभी चीजों को नया नहीं कर देता तब तक लगातार जारी रहा है। ''तुम्हारे बीच में मसीह का राज्य'' (लूका 17:21) मसीहत के प्रत्येक भाग में प्रवेश करता है और उसके विचारों, उद्देश्यों, मनोभाव, चरित्र, उसकी बोलचाल, व्यवहार, संबन्धों और सेवकाई में बदलाव के परिणाम के रुप में आता है, खमीर के सामन पूरे गूथें हुए आटे को खमीरा कर देता है। और ''मसीह का राज्य बाहरी रुप में'' व्यक्ति के भले के लिए उसके व्यक्तिगत जीवन में, उसकी परिस्थितियों में, उसके परिवारिक जीवन में, और उसके सामाजिक जीवन में, राई के पेड़ के समान पक्षियों को अपना घर बनाने देने के रुप में अपने प्रभाव को डालता है।

मसीह का राज्य मनुष्य के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अधिकार करने की प्रक्रिया में रहता है। 2कुरि. 10:5 में, पौलुस अपने उद्देश्य को कहता है मसीह कार्यकर्त्ता के समान, ''सो हम कल्पनाओं (झूठ) को, और हर एक ऊँची बात (वादविवाद) को जो परमेश्वर की पहचान के विरोध (गैर मसीहों की घोषणाएँ) में उठती है खण्डन करते है; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं।'' परमेश्वर का राज्य लोगों को परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत संबन्ध में ही नहीं लेकर आता, परन्तु इसका उद्देश्य है प्रत्येक विचार को उसके प्रति समर्पण में लाना और इस प्रकार मसीह के साथ एकता में लेकर आना। मसीह का राज्य बढ़ते हुए क्रम में और भी बहुत सी जुबानों को ले कर आता है जो यह स्वीकार करती हैं कि मसीह ही प्रभु है और बहुत से घुटनों को मसीह के सामने झुकने के लिए लाता है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

संसार में परमेश्वर के राज्य का महान परिणाम यह है कि मानवीय संस्कृति और प्रयास के प्रत्येक क्षेत्र में आशीष होना आरंभ हो जाती है। कलीसिया ही नहीं, परन्तु विज्ञान, कला, साहित्य, शिक्षा, खेती, व्यपार, उद्योग, वाणिज्य, सरकार, और मानवीय विचार के सभी विभाग और प्रयास समाज में मसीहों की गतिविधियों के द्वारा आशीषित होना आरंभ कर देते हैं। सम्पूर्ण मसीह दौर में, मसीही लोगों का अस्पताल और अपहिजो की देखभाल, दासत्व को समाप्त करने, स्त्रीयों के अधिकार को बनाये रखने, गरीबी को समाप्त करने और अनपढ़ों की शिक्षा पर विशेष प्रभाव रहा। उन लोगों के बीच में जो सरकार में होते है और व्यपार करते है और उन लोगों में जो युद्ध बन्दियों के साथ, स्त्रीयों, काम करने वाले लोग, और वंचितों के साथ व्यवहार करते है, ईमानदारी और शुद्धता के बढ़ावे में उनका बड़ा प्रभाव रहा। परमेश्वर का राज्य पृथ्वी के लोगों के मध्य सत्य, प्रेम, पवित्रता, वफादारी, गंभीरता, सहास और न्याय आदि को बढ़ावा देता है! बाइबल यह नहीं सिखाती कि यह आदर्श मसीह के दूसरे आगमन तक पहुँचेगा। केवल मसीह के दूसरे आगमन पर घटने वाली घटनाएँ परमेश्वर के राज्य को उसके सही और सिद्ध रुप में लाकर अन्तिम रुप को स्थापित करेंगी। परन्तु तब तक परमेश्वर के राज्य की बढ़ोहत्तरी सुसमाचार की घोषणा और परमेश्वर के वचन के प्रति मसीही लोगों की आज्ञाकारिता के द्वारा होती रहेगी।

(7) परमेश्वर के राज्य का बाहरी प्रगटिकरण क्रमिक है।

राई के दाने का दृष्टान्त सिखाता है कि परमेश्वर के राज्य का आरंभ महत्वहीन प्रतित होता है, परन्तु इस छोटे आरंभ से बड़े परिणाम निकल कर आते हैं। यह सत्य ''एक रहस्य'' या ''गुप्तबात'' है (मत्ती 13:11), जिसके लिए अग्रिम स्पष्टिकरण या पुर्नबल देने की आवश्यकता है।

मसीह के निष्ठावान अनुयायी बहुत बार उत्सुक होते थे। अपेक्षाकृत, यह समूह इतना छोटा और कमजोर था कि एक समय पर वे गायब हो गये। वे बहुत से क्रान्तिकारी बदलावो या आक्समिक घटनाओं के तुरन्त घटने की प्रतिक्षा में रहते थे (मत्ती 21:8-9; लूका 9:54; यूहन्ना 6:15; प्रेरितों के काम 1:6)। वे यह उमीद करते थे कि मसीह पूरे संसार को उलट-पुलट करके रख देगा, अपने लोगों को अपने राज्य में एकत्र करेगा और अपने शत्रुओं का नाश कर देगा (उदाहरण के लिए मत्ती 3:10-12)।

वे इस्राएल के उत्थान, सभी जातियों पर उसकी बढ़ोत्तरी और मसीहात्मक युग के दौरान इसके वैश्विक महत्व के लिए पुराने नियम की भविष्यवाणीयों पर ध्यान लगाते थे (उत्पत्ति 22:17-18; भ.सं. 72:8-11; उदा. यशायाह 54:2-3; यशायाह अध्याय 60-62; यिर्मयाह 31:31-40; 32:36-44; आमोस 9:11-15; मलाकी 2:12-13; मिक्का अध्याय 5; जकर्याह अध्याय 2; 8:18-23 आदि)। उदाहरण के लिए, ''बहुत से देशों के वर सामर्थी जातियों के लोग यरुशलेम में सेनाओं के यहोवा को ढूंढने और यहोवा से विनती करने के लिए आएंगे.....उन दिनों में भांति भांति की भाषा बोलने वाली सब जातियों में से दस मनुष्य, एक यहूदी पुरुष के वस्त्र की छोर को यह कहकर पकड़ लेंगे कि हम तुम्हारे संग चलेंगे, क्योंकि हम ने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है।'' (जकर्याह 8:22-23)। जब यहूदी और यीशु मसीह के अनुयायी पुराने नियम में इन पद्यांशों के बारे में सोचते थे तो वे अक्सर उन्हें उनके संदर्भ से बाहर समझ लिया करते थे और उन्हें इस्राएल के लिए नये नियम के प्रगटीकरण की रौशनी में पूर्ण रुप से व्याख्यानित किए बिना ले लिया करते थे।

वही समान पुराना नियम सिखाता है कि महान आत्मिक परिणाम सामान्य रुप से छोटे आरंभ से ही विकसित होते है (उदा यशायाह 1:8-9; 11:1; 53:2-3; यहेजकेल 17:22-24; दानियल 2:34-35,44; जकर्याह 4:10)। उदाहरण के लिए, ''फिर प्रभु यहोवा यों कहता है, मैं भी देवदार की ऊंची फुनगी में से कुछ लेकर लगाऊंगा, और उसकी सब से ऊपरवाली कनखाओ में से एक कोमल कनखा तोड़कर एक अति ऊंचे पर्वत पर लगाऊंगा। अर्थात् इस्राएल के ऊंचे पर्वत पर लगाऊंगा; सो वह डालियां फोड़कर बलवन्त और उत्तम देवदार बन जाएगा, अैर उसके नीचे अर्थात उसकी डालियों की छाया मे भांति भाति के सब पक्षी बसेरा करेंगे। तब मैदान के सब वृक्ष जान लेंगे कि मुझ यहोवा ही ने ऊंचे वृक्ष को नीचा और नीचे वृक्ष को ऊंचा किया, हरे वृक्ष को सुखा दिया, और सूखे वृक्ष को फुलाया है। मुझ यहोवा ही ने यह कहा और वैसा ही कर भी दिया है।'' (यहेजकेल 17:22-24)

वह सत्य कि परमेश्वर का राज्य एक बहुत छोटे आरंभ से एक महान परिणाम में बढ़ जाता है नये नियम में पक्का हो जाता है। लूका 12:32 कहता है, ''हे छोटे झुण्ड, मत डर; क्योंकि तुम्हारे पिता को यह भाया है, कि तुम्हें राज्य दे।'' और 1कुरि. 1:26-31 में हम पढ़ते हैं, ''हे भाईयो, अपने बुलाए जाने को तो सोचो, कि न शरीर कि अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए। परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खो को चुन लिया है, कि ज्ञानवानों को लज्जित करे; और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है, कि बलवानों को लज्जित करे। और परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों को, वरन जो हैं भी नहीं उन को भी चुन लिया, कि उन्हें जो

हैं, व्यर्थ ठहराए। ताकि कोई प्राणी परमेश्वर के सामने घमण्ड ने करने पाए। परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिए ज्ञान ठहरा अर्थात धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा। ताकि जैसा लिखा है, वैसा ही हो, कि जो घमण्ड करे वह प्रभु में घमण्ड करें।''

नये नियम में बढ़ोत्तरी के दृष्टान्त सिखाते है कि परमेश्वर के अनुग्रह का नियम, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि यह कितनी महत्वहीन और तुच्छ शुरुवात दिखाई देती है, परन्तु यह आगे बढ़ने के लिए नियुक्त है और अधिक से अधिक लोगों के हृदय, जीवनों और जीवन के हर क्षेत्र में लगातार विजयी होता जा रहा है। वे मसीह के अनुयायीयों को उत्साहित करते है कि धीरजवन्त हों, भरोसा रखें, लगातार प्रार्थना करते रहें और सुसमाचार की घोषणा करते रहे, क्योंकि परमेश्वर की योजनाएँ और कार्यक्रम असफल नहीं हो सकते और असफल नहीं होंगे! जब राज्य का सुसामाचार (यीशु का राज्य) पूरे संसार में सभी जातियों को गवाही के रुप में प्रचारित किया जाता है, तब अन्त अवश्य ही आएगा (मत्ती 24:14)!

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ आपने सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में बारी बारी परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना करें।***
या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी** (2 मिनट)	***(निर्धारित कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. प्रतिबद्धता। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर ''गुप्त में बढ़ने वाले बीज का दृष्टान्त'' ''खमीर का दृष्टान्त'' और ''राई के दाने का दृष्टान्त'' का प्रचार करें, पढ़ाएँ या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **1शमूएल 15,16,17 और 18** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. याद करना। **(4) रोमियों 2:15।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 3:1-20।**
   बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपने लेख का अद्यपन करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।